Vol 5 Issue 8 Feb 2016 ISSN No :2231-5063

International Multidisciplinary Research Journal

Golden Research Thoughts

Chief Editor
Dr.Tukaram Narayan Shinde

Publisher
Mrs.Laxmi Ashok Yakkaldevi

Associate Editor
Dr.Rajani Dalvi

Honorary
Mr.Ashok Yakkaldevi

Welcome to GRT

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2231-5063**

Golden Research Thoughts Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Manichander Thammishetty
Ph.d Research Scholar, Faculty of Education IASE, Osmania University, Hyderabad

International Advisory Board

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

.....More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.aygrt.isrj.org

Golden Research Thoughts
International Recognition Multidisciplinary Research Journal

ISSN: 2231-5063 Impact Factor : 3.4052(UIF) Volume - 5 | Issue - 8 | Feb - 2016

'इक्कीसवीं सदी के प्रथम दशक की स्त्री कहानियों में नये जीवन–मूल्य'

सुधीर गणेशराव वाघ
अध्यक्ष हिंदी विभाग, शिवाजी महाविद्यालय, हिंगोली.
जिला हिंगोली.

प्रस्तावना

इक्कीसवी सदी प्रगति की सदी है । चारों ओर नई–नई क्रांतियॉ जन्म ले रहीं हैं । चाहे वह क्षेत्र उद्योग का हो या शिक्षा या फिर तकनीकी का हो, इस क्रांति के फलस्वरूप समाज प्रगति की ओर अग्रसर होता हुआ दिखाई देता है । कहा जाता है साहित्य समाज का आईना होता है । इस सदी ने पीडितों, शोषितों को वाणी देने का श्रेयस्कर कार्य किया । इक्कीसवी सदी की बदलती राष्ट्रीय, सामाजिक व आर्थक स्थितियों तथा शिक्षा के प्राचार– प्रसार ने स्त्री जीवन को अत्याधिक प्रभावित किया है । इसलिए स्त्री–विमर्श चिंतन पे साहत्य में विशेष स्थान प्राप्त किया है । समाज में जहॉ भी दमन है, शोषन है, अत्याचार है स्त्री साहित्य उसके विरोध में खडा हुआ ।

आज की स्त्री, जिसकी ऑखों में ऑसू तो है परन्तु उसने उस ऑसू को अपने गालों पर सुखाकर धब्बे नहीं पडने दिए बल्कि आंसुओं को पोंछकर होठों पर मुस्कान सजाना सीख रखी है, जिसने समझा लिया है कि आज तक उसका शोषण इस कारण होता रहा क्योंकि वह न तो मुक्ति के व्दार को खटखटाना जानती थी और ना ही व्दार पार क्या है उसे देखना या महसूस करना । वैदिक कालीन स्त्री से लेकर वर्तमान कालीन स्त्री की सामाजिक यात्रा अत्यंत कठिन बंधनों के जकडन से युक्त, बर्बर, मर्यादाओं, अत्याचारों और शोषण से युक्त रही है । विभिन्न संकटों से गुजरते हुए स्त्री मुक्ति का आन्दोलन इक्कीसवीं सदी तक आ पहुचा है ।

इक्कीसवीं सदी के प्रथम दशक की स्त्री कहानीकारों में कृष्णा सोबती, मृदला गर्ग, ममता कालिया, मन्नू भण्डारी, चन्द्रकिरण सौनरेक्सा, नासिरा शर्मा, गीतांजली श्री, मंजुल भगत, जया जादवानी, महुआ माजी, राजी सेठ, प्रभा खेतान, अलका सरावगी आदि व्दारा लेखिकाओं ने अपनी कहानियों में स्त्री संघर्ष नए जीवन मूल्यों को वाणी देने का प्रयास किया है । इक्कीसवीं सदी के समाज में स्त्रियों को

वास्तविक छवि का संगोपांग स्त्री कहानियों व्दारा हुआ हैं । प्रेम, बलिदान तथा विनम्रता की प्रतीक समझाी जानेवाली स्त्री को परिवार और समाज में किस तरह की उपेक्षांए झेलनी पडती हैं, कर्तव्य के नाम पर उसे अपने अधिकारों से किस तरह वंचित रहना पडता है, देश का कानून स्त्रियों पर होनेवाले अपराधों को रोक पाने में असफल क्यों है? समानता के हक्क की प्राप्ति के लिए स्त्रियों को समाज में किस तरह से जूझाते हुए जीना पडता है । यह कहानियॉ इन सवालों की स्पष्ट तस्वीर पेश करती है ।

स्त्री कहानीकारों ने स्त्री–जीवन के विभिन्न पहलुओं को, क्षेत्रों को, परिस्थितियों को, समस्याओं को पूरी शिद्दत के साथ उकेरा । सबसे बडी बात, भोगने वाली भी स्त्री और अभिव्यक्त करने वाली भी स्त्री, इस भोगे हुए सच और उपभोग की कहानी जब जबानी अभिव्यक्त हुई तो साहित्य में नयेपन का, ताजगी का और प्रखरता का पदार्पण हुआ । साथ ही एक जीती–जागती क्रांति ने जन्म ली । एन. मोहनन के अनुसार– "आज का जीवन स्वकेंद्रित और अर्थ केन्द्रित अधिक है । इसी वजह से जीवन मूल्यों में गिरावट तथा मानवीय संबंधो में तनाव की स्थिति पैदा हो रही है । आज प्रेम, समर्पण, निष्ठा जैसी भावनाओं का लोप होता जा रहा है । आधुनिक समाज में व्यक्ति अकेला औए आत्मकेंद्रित बन गया है । वह अपनी जडों से विछिन्न होकर भटकता रहता है । सभी जगह उसे मूल्य–हीनता की स्थिति दिखाई पडती है । औद्योगीकरण के कारण घरेलू सम्बन्ध शिथिल हो गए और परिवार विघटित होकर छिन्न–भिन्न हो गया ।"[1]

चित्र मुदगल की 'लाक्षाग्रह' कहानी इसी परिवर्तित जीवन–मूल्यों का विश्लेषण प्रस्तुत करती है । कथा–नायिका 'सुनिता' प्रौढता की सीमा को छूती अविवाहित स्त्री है । वह आकर्षण सौन्दर्य की स्वामिनी तो नहीं लेकिन अच्छी तनख्वाह की नौकरी बहुत हद तक इस कमी

को पूरा कर देती है । उसकी आकर्षक नौकरी और अच्छी तनख्वा के लोभ में आकर उसका सहकर्मी सिन्हा उसके समक्ष विवाह का प्रस्ताव रखता है ।ऐसे में 'अर्थ' का आकर्षण सुन्दरता की तुलना में प्रबल है । मित्र व्दारा इस विवाह पर आपत्ति जताने पर सिन्हा बडे ही सस्ते ढंग से कहता है – "सोच आठ सौ रूपये महीने कमानेवाली कहॉ मिलेगी? सौदे की तो कोई शक्ल–सूरत नहीं होती मेरे यार । "[2]

उपयोगिता की दृष्टी से स्त्री को तौलनेवाला आज का पुरूष विवाह जैसे सामाजिक, भावनात्मक कृत्य में भी लाभ खेजता है । आर्थिक स्वालंबन ने एक तरफ यदि स्त्री के व्यक्तित्व में बहुत कुछ जोडा । उसे सामाजिक प्रतिष्ठा दिलायी । पारिवारिक मान–सम्मान दिलाया, तो दूसरी ओर शोषण का नया मार्ग भी खोल दिया ।

'रिमोट कंट्रोल' लता शर्मा की कहानी पुरूषवादी वर्चस्व को अपना केन्द्रीय विषय बनाकर चलती है । इसमें पौरूषीय अहं को उजागर किया गया है, जो स्त्री को अपने अधीन देखकर तृप्त होता है । कथा–नायिका 'छाया' को पति ने अपनी इच्छा, अपने व्यक्तित्व और 'स्टेटस' के अनुकूल छिला, तराशा है । छाया वैसे आम भारतीय स्त्री तरह व्यक्तित्व हीनता की स्थिति में जीने की आदि स्त्री हो गयी है । उसके अपने निजी अस्तित्व की बात उठाती है – "क्या उसका व्यक्तित्व बचा ही नही? साबुन की बट्टी की तरह, धीरे–धीरे बिल्कुल जरा–सा रह गया । इतना जरा–सा की उसका कोई सार्थक उपयोग ही न रहे ।"[3] नीरसता का जीवन जीने को बाध्य नारी की त्रासदी का चित्रण किया है, जिसमें जीवन के अनुबंधों के प्रति ललक तो हैय परन्तु वे सामाजिक अन्याय का शिकार होकर मुक्त होकर जीने की इच्छा से भी वंचित कर दी जाती है ।

स्वतंत्रता प्रप्ति के बाद भारतीय समाज में स्थापित जीवन–मूल्यों और नैतिक–मूल्यों का तेजी से विघटन हुआ । उनके स्थान पर नये मूल्यों की खोज और सवीकृति के प्रयास हुए । बदलाव की प्रक्रिया में स्त्री ने पारंपारिक दृष्टिकोण को अपनाया । यह निजी जीवन–शैली अभिरूचि तक ही सीमित नहीं रही । प्रेम और यौन–संबंधों में भी स्वच्छंदतापुर्ण आचरण को अपनाया जाने लगा ।

उषा प्रियवंदा की 'जिंदगी और गुलाब के फूल' कहानी आर्थिक सक्षमता प्राप्त स्त्री की बदलती हुई भूमिका का विश्लेषण प्रस्तुत करती है । 'जिंदगी और गुलाब के फूल' की वृंदा अर्थार्जन करने में सक्षम हुई तो घर में उसका महत्व और वर्चस्व के केंद्र बदल गए । भूमिकाएं उलट गयीं ।"अब खाना वृंदा की सुविधा के अनुसार बनता था । .... जब नौ बजे वृंदा खा लेती, तो वह चाय पीना पहले जब तक वह स्वयं अखबार न पढ लेता था, वृंदा को अखबार छूने की हिम्मत नहीं पडती थी ।"[4]

सदियों से पितृसत्तात्मक मानसिकता ने स्त्री को अपने अधीनस्थ बना रखा उसका यों दोयम होने की स्थिति में कुंठीत या असंतुलित हो जाना बडी स्वाभाविक प्रक्रिया है । वृंदा का चरित्र स्त्री को सामाजिक सम्मान और वैयक्तिक गरिमा हासिल करने में निर्णायक भूमिका निभाई । मृणाल पाण्डे की कहानियॉ भी जीवन की त्रासदी और स्त्री की वेदना के बहुत से छोरों से सटती हुई आगे बढती है । दीप्ती खंडेलवाल की कहानियों में एक ऐसी स्त्री की छवि कौंणती है, जो जीना चाहती है, अपने आत्मसम्मान और शक्तियों के साथ जीना चाहती और अक्सर अपने आपकों किसी अनिर्णय के दोराहे या तिराहे पर खडा पाती है ।

जया जादवानी की कहानी 'शाम की धुप में' जिसमें परिवार में वृध्दों की अपमानजनक स्थिति, उपेक्षा, विवशता, अकेलापन आदि का चित्रण गहरी संवेदना के साथकिया गया है ।"मै भी तो यही खाती हुॅ । सब यही खाते है । तुम्हांरे बुढापें में भी जबान का चस्का नहीं गया । मैं भी क्या करूॅ? भगवान ने अंधा बना दिया । जवान थी, तो जो कहते थें, बना देती थी । अब ...."[5]

सुधा अरोडा उन प्रतिभा संपन्न नई लेखिकाओं में है, जिन्होंने कुछ ही कहानियों से बहुत ध्यान आकर्षित किया है भगवान ने इनकी कहानियों में एक ऐसी स्त्री चित्रित हुई है, जो परस्पराओं के प्रति मोहग्रस्त नहीं है पर वर्तमान जीवन परिस्थितियों में भी अपना सामजंस्य स्थापित नहीं कर पाती । उनकी कहानियों में सामाजिक जागरण की प्रस्तुति हुई ह और नये जीवन मूल्यों को चित्रित किया है और घर–परिवार से बाहर समाज के वृहत्तर जीवन यथार्थ को वस्तु धरातल पर स्वीकारा है । 'दमनचक्र' कहानी नौकरी करती हुई लडकी के जीवन–संघर्ष के साथ लेखिका ने उसके भाई को भी कथा में प्रतिष्ठित किया है जो बेरोजगार हैं – "अपने–अपने घरों से नहीं, अपनी–अपनी कमाई से । सिर्फ मेरी कमाई से यह धर कितनी अच्छी तरह चल रहा है, शायद तुझे दिखाई नहीं देता । तुझे उलटे मुझे से पचीस रूपए मॉग रहा है ।"[6]

इक्कीसवीं सदी की कहानियां वर्तमान समाज का सही रूप स्पष्ट करती है और इंसान को सही परिप्रेक्ष्य में रखकर विचार–विमर्श करती है । नासिरा शर्मा ने अपनी कहानियों के व्दारा मानव जीवन में व्याप्त अकेलापन, घुटन, इंसान के दिल और दिमाग की टकराहट आदि को अभिव्यक्त करती है । गीतांजलि श्री कि कहानियॉ मुख्यतः स्त्री चेतना की कहानियॉ है । इनकी कहानियों में अपने जीवन को अपने ढंग से जीने वाले स्त्री पात्र है और मध्यमवर्गीय परिवार में पुरूष वर्चस्व के चलते अपनी स्थिति को नियति मानकर चुप बैठने वाले स्त्री पात्र भी दिखाई देते है । मधु कांकरिया की कहानियॉ वर्तमान जीवन सन्दर्भो के अनेक आयामों को उजागर करने वालि और रचनात्मक दिशा प्रदान करने वाली है ।

इक्कीसवी सदी के प्रथम दशक के स्त्री कहानिकार विशेष रूप स आधुनिक स्त्री जीवन–मुल्यों के सत्यों, गुत्थियों को खालने का सफल प्रयास कर रही है । स्त्रियों के आतंरिक संसार को बडे संवेदनशील और तटस्थ भाव को विश्लेषित किया गया । स्त्री कहानिकारों को स्वयं ओर उनकी कथा–यात्राओं को दयाभाव या स्त्री सहानुभूति की आवश्यकता नहीं रही । पुरूष के साम्राज्य में अतिरीक्त विनय भाव में नत रहने वाली सजी–धजी गुडीया, अब स्वावलंबी व्यक्ति बनकर खडी है । जागतिक कार्य–व्यापार में पुरूषों के समान सक्रीय भागीदारी निभाने को प्रतिबध्द और चेतना संपन्न ..... । इक्कीसवीं सदी के स्त्री कवयित्रियों ने कुछ तीखे, ज्वलंत प्रश्नों, अंतविरोधों और विरोधाभासों को अपनी कविता में प्रस्तुत किया है जिससे स्त्री–सृजन की एक अलग पहचान बनने लगी है । इनकी रचनाओं में स्त्री के अधिकारों के प्रति सजगता के साथ–साथ समाज की अन्य समस्याऍ भी उदघाटीत हुई दिखाई देती है । इनकी सृजनात्मकता आक्रमक, तीखा और पितृक समाज की कडी आलोचना से परिपुर्ण है । यह परिवर्तन इक्कीसवी सदी में सर्वाधिक दृष्टित हुआ । जो स्त्री – लेखन सिर्फ घर, परिवार, बच्चे, स्त्री–पुरूष बिखराव तक सीमित था उस स्त्री–लेखन आंतरिक और बाहरी दुनिया में इस सदी में काफी बदलाव आया है ।

संदर्भ – ग्रंथ

1.अनुसंधान (त्रैमासिक शोध पत्रिका), जुलाई–सितम्बर 2013, सं.डॉ. शगुप्ता नियाज, कानपुर य पृ.सं. 86
2.'ममला आगे बढेगा भी' , चित्रा मुदगल, प्रभात प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 2002 य पृ.सं. 91
3.कथाक्रम, अप्रैल–जून, 2002 य पृ.सं. 92
4.'मेरी कहानियॉ', उषा प्रियवंदा, वाणी प्रकाशन, 2000, नई दिल्ली य पृ.सं. 18
5.'मुझे ही होना है बा–बार', जया जादवानी, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2000 य पृ.सं. 13
6.कहीनी 'दमनचक्र' सुधा अरोडा, साहित्य भंडार प्रकाशन, इलाहबाद य पृ.सं. 13

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- EBSCO
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Golden Research Thoughts
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.aygrt.isrj.org